YOUNG INDIA > YOUNG PAPER

NBT

नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली/ लखनऊ > गुरुवार, 13 जुलाई 2017 > आषाढ़ 22 शक 1939 श्रावण कृष्ण 4 विक्रम 2074 | www.nbt.in | पेज 20* | मूल्य सिर्फ 3.00 रु.

शराब बिक्री पर अरुणाचल, अंडमान को राहत

देखें Front Page 2 जाएं पेज 16

अंटार्कटिका में टूट गया गोवा से डेढ़ गुना बड़ा आइसबर्ग

ग्लोबल वार्मिंग का असर

नासा ने कहा-फिलहाल कोई बड़ा खतरा नहीं, रखे हैं करीबी नजर

■ एएफपी, पैरिस : बर्फीला रेगिस्तान कहे जाने वाले अंटार्कटिका में एक अहम घटना घटी है। इसके एक हिस्से में कुछ महीनों पहले एक दरार देखी गई थी जिस पर अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा निगाह बनाए हुए था। इस दरार के बारे में नासा का कहना है कि 10 से 12 जुलाई के बीच अंटार्कटिका के पश्चिमी आइस शेल्फ से टूटकर एक बड़ा हिस्सा अलग होते देखा गया है। इसे ए68 नाम दिया जा रहा है। इसकी विशालता का अंदाजा इसी से लग जाता है कि यह गोवा से भी डेढ़ गुने आकार का है।

इसमें दुनिया की बड़ी झीलों में से एक एरी झील से भी दोगुना पानी है। इसकी मोटाई 350 मीटर तक है और वजन कई ट्रिलियन टन। ए68 के अलग होने के बाद लार्सन सी नामक इस आइस शेल्फ की सतह का आकार 12 पर्सेंट कम हो गया है।

ये असर होगा

स्वानसी यूनिवर्सिटी के मुताबिक, जो हिस्सा टूटकर अलग हुआ है वह पहले से ही समुद्र में तैर रहा था, इसलिए समुद्र के जलस्तर में तुरंत कोई बदलाव देखने को नहीं मिलेगा। असल में अंटार्कटिका में आइसबर्ग के टूटकर अलग हो जाना आम बात है। मगर ताजा घटना आइसबर्ग के आकार की वजह से अहम है। ऐसे में अलग हुए इस आइसबर्ग पर करीबी से निगाह रखी जाएगी कि यह किस ओर बढ़ता है। यह भी ध्यान रखा जाएगा कि कहीं इससे शिपिंग ट्रैफिक पर तो कोई असर नहीं होगा।

ये भी जानें

320 किमी/घंटे की रफ्तार से चल सकती हैं हवाएं यहां पर वैज्ञानिकों के अनुसार

9000 फुट ऊंचे और 1200 किमी दायरे में फैले हैं यहां के गेमबर्टसेव माउंटेंस

70 फीसदी हिस्सा साफ पानी का अंटार्कटिका पर है

1.6 किमी के करीब होती है अंटार्कटिका के बर्फ की थिकनेस

16 फुट तक बढ़ जाएगा समुद्र का लेवल अगर अंटार्कटिका का वेस्टर्न हिस्सा पिघलता है तो

3.7 किमी नीचे बहुत बड़ी वोसटोक लेक है अंटार्कटिका की बर्फ के करीब

आइस शेल्फ का मतलब

आइस शेल्फ समुद्री तट से सटे होते हैं और समुद्र में तैरते रहते हैं। इनके वजूद को बनाए रखते हैं जमीन पर स्थित ग्लेशियर जो धीरे-धीरे बह रहे होते हैं। असल में ये ग्लेशियरों को सीधे समुद्र में बहने से रोकते हैं। ग्लेशियर अगर सीधे समुद्र में जाते हैं तो वैश्विक जल स्तर में 10 सेंटीमीटर का इजाफा हो जाएगा। हालांकि आइस शेल्फ का टूटना कुदरती प्रक्रिया है मगर माना जाता है कि ग्लोबल वार्मिंग ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया है। महासागर का गर्म पानी आइस शेल्फ को नीचे से पिघलने देता है तो हवा का तापमान उसे ऊपर से कमजोर करता जाता है। 1995 में पास का लार्सन ए आइस शेल्फ टूटा था जिसके सात साल बाद लार्सन बी भी टूट गया था।